अयोध्या सिंह उपाध्याय 'हरिऔध'

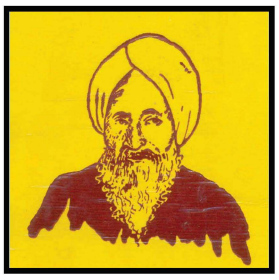

अयोध्या सिंह उपाध्याय 'हरिऔध' का जन्म उत्तर प्रदेश राज्य के आजमगढ़ जिले के निजामाबाद में सन् 1865 में हुआ था । प्रारंभिक शिक्षा घर पर ही चाचा बस्तसिंह के सान्निध्य में पाई । घर पर ही संस्कृत और फारसी का अध्ययन किया । उच्च शिक्षा के लिए क्वींस कॉलेज, वाराणसी में दाखिला लिया, किंतु अस्वस्थता के कारण पढ़ाई पूरी नहीं कर सके । उन्होंने कानून की भी पढ़ाई की और 1889 ई० में कानूनगो के पद पर नियुक्त भी हुए । लेकिन हरिऔध जी का मन पढ़ने-पढ़ाने में अधिक लगता था । इसलिए उन्होंने स्कूल में भी और विश्वविद्यालय में भी प्राध्यापन का कार्य किया । काशी हिंदू विश्वविद्यालय में उन्होंने अवैतनिक प्राध्यापक के रूप में अपना योगदान दिया । सन् 1947 में हरिऔध जी चल बसे ।

हरिऔध जी ने अनेक विधाओं में रचनाएँ कीं । उनकी प्रमुख काव्यकृतियाँ हैं- 'प्रियप्रवास', 'चोखे चौपदे', 'वैदेही वनवास', 'चुभते चौपदे' आदि । उन्होंने 'प्रेमकांता', 'ठेठ हिंदी का ठाठ' और 'अधखिला फूल' नामक उपन्यास भी लिखे । 'प्रद्युम्न विजय' और 'रुक्मिणी परिणय' उनके प्रसिद्ध नाटक हैं । हरिऔध जी ने 'कबीर वचनावली' का संपादन भी किया जिसकी उपादेयता आज तक बनी हुई है । 'ठेठ हिंदी का ठाठ' आई० सी० एस० के पाठ्यक्रम में शामिल किया गया था ।

खड़ी बोली को काव्यभाषा के पद पर प्रतिष्ठित करनेवाले कवियों में हरिऔध का नाम महत्त्वपूर्ण है । उन्नीसवीं शताब्दी के अंतिम दशक में साहित्य के क्षेत्र में आनेवाले हरिऔध आरंभ में नाटक तथा उपन्यास लेखन की ओर आकर्षित हुए, परंतु उनकी प्रतिभा का विकास वस्तुतः कवि के रूप में हुआ । हरिऔध को कवि के रूप में सर्वाधिक प्रसिद्धि उनके प्रबंधकाव्य 'प्रियप्रवास' के कारण मिली । इसी काव्यकृति के कारण उन्हें खड़ी बोली का प्रथम महाकवि होने का श्रेय मिला । खड़ी बोली को भलीभाँति प्रस्तुत करने के लिए उन्होंने अपनी रचना में उसके कई रंग भरे । संस्कृत वर्ण-वृत्तों में नितांत तत्सम पदावली 'प्रियप्रवास' में प्रयुक्त की तो एकदम बोलचाल की खड़ी बोली अपने 'चौपदे' में ।

प्रस्तुत कविता 'पलक पाँवड़े' में प्रकृति का व्यापक मनोहारी रूप प्रकट हुआ है । इस कविता में प्रकृति-सौंदर्य, प्रेम तथा स्वतंत्रता के भाव संश्लिष्ट रूप में व्यक्त हुए हैं ।

पलक पाँवड़े

आज क्यों भोर है बहुत भाता ।
क्यों खिली आसमान की लाली ।।
किसलिए है निकल रहा सूरज ।
साथ रोली भरी लिए थाली ।।

इस तरह क्यों चहक उठीं चिड़ियाँ ।
सुन जिसे है बड़ी उमंग होती ।।
ओस आकर तमाम पत्तों पर ।
क्यों गई है बखेर यों मोती ।।

पेड़ क्यों हैं हरे-भरे इतने ।
किसलिए फूल हैं बहुत फूले ।।
इस तरह किसलिए खिलीं कलियाँ ।
भौंर हैं किस उमंग में भूले ।।

क्यों हवा है सँभल-सँभल चलती ।
किसलिए है जहाँ-तहाँ थमती ।।
सब जगह एक-एक कोने में ।
क्यों महक है पसारती फिरती ।।

लाल नीले सफेद पत्तों में ।
भर गए फूल बेलि बहली क्यों ।।
झील तालाब और नदियों में ।
बिछ गईं चादरें सुनहली क्यों ।।

किसलिए ठाट बाट है ऐसा ।
जी जिसे देखकर नहीं भरता ।।
किसलिए एक-एक थल सजकर ।
स्वर्ग की है बराबरी करता ।।

किसलिए है चहल-पहल ऐसी ।
किसलिए धूमधाम दिखलाई ।।
कौन-सी चाह आज दिन किसकी ।
आरती है उतारने आई ।।

देखते राह थक गईं आँखें ।
क्या हुआ क्यों तुम्हें न पाते हैं ।।
आ अगर आज आ रहा है तू ।
हम पलक पाँवड़े बिछाते हैं ।।

अभ्यास

कविता के साथ

1. कवि को भोर क्यों भा रहा है ?
2. 'रोली भरी थाली' का क्या आशय है ?
3. कवि को प्रकृति में हो रहे परिवर्तन किस रूप में अर्थपूर्ण जान पड़ते हैं ?
4. हवा के कौन-कौन से कार्य-व्यापार कविता में बताए गए हैं ?
5. सुनहली चादरें कहाँ बिछी हुई हैं और क्यों ?
6. प्रकृति स्वर्ग की बराबरी कैसे करती है ?
7. कवि को ऐसा लगता है कि सभी प्राकृतिक व्यापारों के प्रकट होने के पीछे कोई गूढ़ अभिप्राय है । यह गूढ़ अभिप्राय क्या हो सकता है ? आप क्या सोचते हैं ? अपने विचार लिखें ।
8. यह कविता नवजागरण और स्वतंत्रता संग्राम के दौरान लिखी गई थी, नई चेतना और नया बिहान आने को था । इस कविता में उसकी कोई आहट है ? अगर हाँ तो किस रूप में ? स्पष्ट करें ।
9. कवि को किसकी उत्कंठित प्रतीक्षा है ? इसपर विचार कीजिए ।

कविता के आस-पास

1. 'हरिऔध' द्विवेदी युग के एक प्रमुख कवि हैं ? द्विवेदी युग के कुछ अन्य प्रमुख कवियों की इससे मिलते-जुलते भावों की कविताएँ एकत्र करें और उनमें समानताएँ ढूँढ़ें ।
2. द्विवेदी युग के बाद छायावाद का उदय हुआ । इस कविता में छायावादी कविता के कौन-से लक्षण प्रकट होते दिखाई पड़ रहे हैं ? विचार कीजिए ।

3. सुमित्रानंदन पंत की कविता 'मौन निमंत्रण' उपलब्ध कीजिए और उसके साथ इस कविता पर तुलनात्मक विचार कीजिए ।
4. हरिऔध की प्रकृति पर लिखी कुछ अन्य कविताएँ एकत्र कीजिए और विद्यालय की गोष्ठी में उनका पाठ कीजिए ।

भाषा की बात

1. ''आ अगर आज आ रहा है तू ।'' अगर इस पंक्ति को हम यूँ कर दें - ''आ अगर आज आ रहे हो तुम'' तो अर्थ की दृष्टि से क्या परिवर्तन हो जाता है ? वह उचित है अथवा नहीं ।
2. कविता में प्रयुक्त शब्दयुग्म एकत्र करें और उनके स्वतंत्र वाक्य प्रयोग करें । जैसे - हरे-भरे, सँभल-सँभल, जहाँ-तहाँ आदि ।
3. कविता के अंतिम छंद में 'मैं' की जगह 'हम' सर्वनाम का प्रयोग क्यों है ?
4. निम्नांकित शब्दों के विपरीतार्थक रूप लिखें –
   आसमान, दायाँ, सुबह, स्वर्ग, दिन
5. निम्नांकित शब्दों के पर्यायवाची लिखें –
   आकाश, चिड़िया, फूल, सूर्य, पेड़
6. निम्नलिखित शब्दों का वाक्य-प्रयोग द्वारा लिंग-निर्णय करें -
   भोर, सूरज, मोती, भूल, हवा, झील, तालाब, चाह, पलक ।

शब्द निधि

रोली : तिलक करने के लिए पूजा में काम आनेवाली सामग्री
उमंग : मस्ती, आनंद
बखेर : बिखेरना
बेलि : लता
बहली : बहलना
पलक : आँख की पलक
पाँवड़े : स्वागतार्थ कुम-कुम इत्यादि बिखेरना
तमाम : सभी